SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 5 | May 2026

चन्द्रकांता की कहानियों में वृद्ध विमर्श

बीरेन्द्र किस्कु
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, विश्व भारती, शांतिनिकेतन

शोध सार

साहित्यकार का समय और समाज के प्रति प्रतिबद्ध होता है। साहित्य के केन्द्र में मनुष्य होने के कारण वह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों से प्रभावित होता है। एक लेखक को समय की सभी गतिविधियों से परिचित होना जरूरी है। साहित्य में मनुष्य के सभी वर्ग, वर्ण, धर्म आदि भिन्नताओं के बावजूद एक मानव रूप में एक सामाजिक प्राणी के रूप में ही अवस्थित होता है। रचनाकार का वैयक्तिक जब सामाजिक संवेदनाओं, द्वद्वों से जुड़ जाता है तभी वह साहित्य बन पाता है। रचनाकार पूरे समाज से ही उन्मुख होता ळें साठोत्तरी कहानियों में कई विमर्श आये। प्रेमचंदोत्तर युगीन में जहाँ कथा साहित्य अपने प्रौढ़ स्थिति को पहुँची। वहीं साठोत्तरी में रचनाकारों ने समाज के विभिन्न वर्गों को अपनो कथा साहित्य का आधार बनाना शुरु किया। दलित विमर्ष, स्त्री विमर्श के साथ अब वृद्ध विमर्श पर कथा कहानियाँ रची जाने लगी। वृद्ध विमर्श पर उषा प्रियंवदा, भीष्म साहनी तथा चन्द्रकांता जैसे कहानीकार हुए। हम यहाँ विशेषकर चन्द्रकांता के कहानियों के माध्यम वृद्ध मनोविज्ञान की गहरी पड़ताल करेंगे तथा आधुनिक युग में वृद्धों के जीवन में आई समस्याओं एवं उनके कारणों पर भी चर्चा करेंगे।

बीज शब्द : वृद्ध विमर्श, वृद्ध मनोविज्ञान, वृद्धावस्था संयुक्त परिवार, युवा पीढ़ी, सांस्कृतिक विघटन

मूल आलेख :–

वृद्धावस्था मानव जीवन के उम्र का आखिरी पड़ाव है, जहाँ मनुष्य की शारीरिक तथा मानसिक शक्ति हो जाती है। मात्र रह जाते हैं, अनुभव और ज्ञान का भंडार। भारतीय समाज में वृद्धजनों को ज्ञान, बुद्धिमत्ता और अनुभव का प्रतीक मानकर उन्हें बहुत आदर एवं सम्पादन दिया जाता है। अतः इस तरह समाज वृद्धों को आदर्श मानता है। उनके अनुभव और ज्ञान से समाज, परिवार, मुख्य रूप से नवीन पीढ़ी लाभान्वित होते हैं। मानवीय सदगुण नैतिक मुल्य, संस्कारों के बीज वृद्ध अपने नवीन पीढ़ी को दे जाते है। इस तरह वे मानवीय मूल्यों व अच्छे संस्कारों से एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अहम योगदान देते हैं। चन्द्रकांता रचित 'ऐलान गली जिंदा है'

उपन्यास में मास्टर जी का कथन समाज में वृद्धों की महत्ता रेखांकित करती है– ''यों तो जिन्दगी जैसा अध्यापक कोई दूसरा नहीं होता। फिर भी यदि बुजुर्गो के अनुभवों से कुछ निचोड़ सके तो तकलीफ कम होती है।''[1]

समाज में तेजी से बदलते मूल्यों, सांस्कृतिक विघटन तथा व्यक्तिवादी दृष्टिकोण या स्वार्थता के कारण आज वृद्धों के प्रति संवेदनहीनता तथा महत्वहीनता बढ़ती गई। आज के भौतिक वादी युग में मनुष्य आर्थिक उन्नति पाने के लिए निरंतर अपनों से दूर होता जा रहा है। सफलता, धनदौलत व यश कमाने के लिए मनुष्य भागदौड़ करता है। इसी भागदौड़ भरी व्यस्त जीवन के कारण मनुष्य को अपनों के लिए

Published: 30 May 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i5.45766
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

समय नहीं मिल पाता है। इसी कारण पारिवारिक संबंधों में सगे संबंधियों के बीच खोखलापन आने लगता है। विशेषकर युवा पीढ़ी अपने वृद्ध माता पिता या परिवार के अन्य वृद्धों को उचित देखभाल या सेवा के लिए समय नहीं दे पाते हैं। लेखिका चन्द्रकांता के कई कहानियों में वृद्धों के जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है।

उनकी कहानियों में वृद्ध मनोविज्ञान की बाहरी पड़ताल की गई है, वो भावनाओं के गहरे तह तक जाकर वृद्धों के जीवन के समस्याओं का हृदय स्पर्शी चित्र प्रस्तुत करती है। वृद्ध विमर्श पर केंद्रित अपनी पहली कहानी 'खून के रेशे' के बारे में कहानी है – ''खून के रेशे कहानी मेरे पहले नितांत निजी अनुभवों से जन्मी थी। एक वृद्ध होते पिता की मनः स्थिति को लेकर लिखी गयी वह कहानी परिवार में बूढ़ों में अपेक्षाजनित अपमान और अकेलेपन की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करती है, परन्तु साथ ही पिता में यह अहसास है कि बच्चे चाहे कितनी भी उपेक्षा करें, माता पिता से खून के रिश्तों से बंधे हैं।''[2]

वृद्धावस्था में व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक रूप से कमजोर होने लगते हैं। इसके कारण वृद्धों के सोच में भी परिवर्तन आता है। जिन कार्यो को यौवनकाल में सुगमता से कर पाता था, उन्हीं कार्यो को करने में वृद्धावस्था में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बालो का सफेद होना मांसपेशियां ढीली होना, चेहरे पर झुर्रियाँ, शरीरिक थकान, दैनिक गतिविधि चलने फिरने, उठने बैठने में परेशानी, आँखों की दृष्टि तथा पाचन तंत्र की कमजोरी बुढ़ापे की निशानी है। वृद्धावस्था में मनुष्य कई शारीरिक तथा मानसिक रोगों के शिकार होते हैं। अतः वृद्धों को असुरक्षा का भाव पनपने लगता। ऐसी स्थिति में उन्हें अपने सगे संबंधियों के सेवा व समीक्षा की जरूरत पड़ती है।

'धीख' कहानी में माधुरी देवी शटिका की मरीज है। जोड़ो में दर्द के कारण चल फिर नहीं सकती। अपनी दैनिक गतिविधियों के लिए पूरी तरह बेटी मालती पर आश्रित हो जाती है। माँ की अपंगता के कारण मानसी पर दोहरी कार्य का बोझ आ पड़ता है। मानसी सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय रहती है। अतः उनसे मिलने कई तरह के लोग आते रहते हैं। इस पर माधुरी देवी चीख पड़ती है– ''यह मरे गेस्ट मेरी जान के दुश्मन बन गये हैं। इन्हें क्या मालूम नहीं मैं बीमार हूँ।''[3]

भारतीय परंपरा के परिप्रेक्ष्य में वृद्धों की स्थिति दयनीय नहीं हुआ करती थी क्योंकि यहाँ हमेशा से ही बूढ़े–बुजुर्गो को सम्मान करने की परंपरा रही है। परिवार हो या समाज बच्चे तथा युवाओं का बूढ़े बुजुर्गो के प्रति आदर सम्मान का भाव रहा है तथा बच्चों को बड़ो की आज्ञा पालन करने का संस्कार रहा है। कहा भी गया है– ''अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेबिनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विधा यशो बलः। अर्थात् प्रतिदिन बुजुर्गो को प्रणाम करने और उनकी सेवा करने वाले व्यक्ति की आयु विद्या कीर्ति और शक्ति की वृद्धि होती है।''[4] लेकिन स्थितियाँ बदल रही है, तेजी से हो रहे सांस्कृतिक विघटन ने भारतीय मूल्यों, नैतिकता, नियम व आदर्श को प्रभावित की है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभव आज जेन जी (Gen Z) युवाओं पर पड़ा जिसके कारण युवा पीढ़ी आत्मकेंद्रित हुए, स्वार्थता तथा निजी स्वतंत्रता की भावना उपजी। आज की युवा पीढ़ी अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए स्वार्थी हो जाते हैं। अपने जीवन में बुजुर्गो की दखल पसंद नहीं करते। जीवन के हर अहम फैसले कैरियर, विवाह, तलाक आदि स्वयं निश्चय करते हैं। इस कारण वृद्ध जनों की स्थिति आज समाज में हाशियाकृत और उपेक्षापूर्ण है। वृद्धजन आज परिवार में बेकार वस्तु की तरह दिनभर पड़े रहते हैं। 'खून के रेशे' कहानी में बड़े पापा वृद्धावस्था की मार झेल रहे। उम्र की अंतिम संध्या में बेहद कमजोर व असहाय पड़ गये। परिवार में तीन तीन बेटे व नौकर चाकर है लेकिन कोई भी उनकी उचित देखभाल या सेवा के लिए हाजिर नहीं होते। गुर्राकर नौकरों की सहायता के लिए आवाज देते हैं– ''कहाँ मर गए सब के सब? एक को बच्चा जनना है और दर्द सभी को होने लगा।''[5] इस तरह परिवार या समाज में वृद्धों के प्रति संवेदनहीनता तथा महत्वहीनता देखी गई।

आधुनिक भौतिकवादी युग में वृद्धजनों के लिए अकेलापन एक बड़ी समस्या है। आज के अर्थकेंद्रित युग में युवा पीढ़ी बड़े महत्वकांझी होते हैं। अपनी पढ़ाई, रोजगार, नौकरी या व्यापार या अन्य जरूरतों के लिए देश–परदेश गमन करते हैं। पश्चिमी देशों की मजबूत अर्थव्यवस्था, महानगरीय चकाचौंध, सुख सुविधाएँ तथा अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी देश के युवाओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। इस तरह आज के युवा पीढ़ी विदेश में बस जाते हैं। ऐसी स्थिति में घर में वृद्ध माता–पिता को जिस उम्र मे अपने संतानों की सेवा व सामीप्य की जरूरत पड़ती है, अकेले व असहाय पड़ जाते हैं। वृद्धो को अपने संतानों से दूरी पुत्र वियोग की व्यथा दे जाता है।

'पार्वती का आश्चर्य' कहानी में पार्वती दोनों बेटे रवि और यश पढ़ाई पूरी कर विदेश में बस जाते हैं। माँ अपने दोनो बेटों से दूर होने के कारण उनके सामीप्य को तरसती। पुत्र वियोग के सदमें में चीखती है– ''यश गया नहीं डॉक्टर को? बबली बिट्टी जरा पानी पिला दे, तेरे हाथ से अमृत लगता है। बहु जरा मूँग की खिचड़ी रख देना, दो कौर, भूख नहीं है। रवि बेटे बैठक की खिड़की बज रही है, काँच टूट जाऐंगे, चिटकनी लगा दे।''[6]

महानगरीय परिवेश में वृद्धों की स्थिति और भी दुष्कर होती है। महानगरीय परिवेश में जहाँ लोग बहुमंजिले इमारतों में रहते हैं, जहाँ आसपड़ोस के लोगों मुलाकात या संवाद स्थापित नहीं होता। शहरी लोग अपने काम से मतलब रखते हैं। अतः वृद्धों का दैनिक जीवन कोठरी तक ही सीमित रहती है। उन्हें ग्रामीण परिवेष की तरह स्वच्छंद या उन्मुख वातावरण नहीं मिलता। परिवार के युवा सदस्य दिन भर अपने काम काज में व्यस्त रहते हैं और परिवार के बच्चे दिन भर स्कूलों में। देर रात को ही घर लौट पाते हैं। बाकी समय उनका होमवर्क या पढ़ाई में गुजरता है। इस तरह व्यस्त दिनचार्य में वृद्धों का युवा पीढ़ियों या बच्चों के साथ बातचीत या संवाद का मौका नहीं मिलता।

'वनवास' कहानी में विदेश प्रवास के दौरान जानकी देवी बहु बेटे तथा पोती की सामीप्य के लिए तरस जाती है। उनके बहु बेटे दिन भर काम पर व्यस्त रहती है और पोती एम्मा स्कूल में। खाली समय में जानकी देवी पोती एम्मा को अपने पास बैठने के लिए बुलाती है, लेकिन वह समय भी होमवर्क में गुजर जाता है – ''ग्रैंड माँ बहुत काम है – होमवर्क, ईऽऽतना।''[7]

आज शहरी परिवेश में सुख सुविधाओं के नाम पर आधुनिक चीजें उपलब्ध है। टी0वी0, इंटरनेट, विडियोगेम, कम्प्युटर जैसे मनोरंजन के साधन हुए, जिस कारण सभी बच्चे अपना खाली समय इंटरनेट, टी0वी0 या विडियोगेम में मशगूल रहते हैं। अतः आज के बच्चों के पास परिवार के बूढ़े–बुजुर्गो के संवाद या बातचीत का समय नहीं रहता था। एक जमाना था जब परिवार के नाती पोते दादा–दादी, नाना–नानी के गोद में बैठे शिक्षा प्रद कथा–कहानियाँ सुना करते थे। इस प्रकार मनोरंजन की आधुनिक वस्तु एवं जीवन शैली दो पीढ़ियों के बीच दूरियाँ ला दी। इस कारण वृद्ध आज स्वयं को परिवार में नकारा हुआ समझते हैं। इस संदर्भ में चन्द्रकांता अपनी कहानी में कहती है – ''बच्चे नानी–दादी से ललद्यद सोनकिसरी की कहानियाँ सुनते थे, अब टी0वी0 सिनेमा ने बच्चोंके रूझानों की दिशा बदल दी।''[8]

आज के भौतिकवादी युग में युवा पीढ़ी अपने माँ बाप के लिए धन से खरीदी हुई भौतिक सुख सुविधाएँ मुहैया कराते हैं, उन्हें लगता है कि उनको खरीदी हुई चीजों से वह खुश है। लेकिन भावनात्मक सहारा देने के लिए उनके पर्याप्त समय नहीं होता। फलस्वरूप उन वृद्ध माता पिता शांति से अंतिम सांस लेने का भाग्य नहीं मिलता है।

'तुमने कोशिश तो की थी' कहानी में राजन और सावित्री के वृद्ध माता दयनीय व हृदयस्पर्शी चित्रण है। वृद्ध माँ बाप अपने अंतिम क्षण में भी अपने संतानों की झलक को तरस गये– ''दोनों उम्र और रोग से अपाहिज राजन के भेजे गये नोट सिरहाने के नीचे दबाये हाथ पकड़कर उठाने और माथा दबाने

के लिए नौकरों के मुहताज लेकिन वे बेटे की भविष्य की योजनाओं में तो आड़े नहीं आये थे। उन्होंने अपनी नियति स्वीकार लिया है। घोर परंपरावादी विश्वासों में पत्नी माँ चाहती थी कि बेटा अंतिम समय में कंधा देकर घाट पहुँचआये, परन्तु उसकी उम्र कुछ इस कदर लंबी होती जा रही है कि बेटा कई बार आकर गया, तब भी उसकी सांस रूकी नहीं।''

संयुक्त परिवार का विघटन भी वृद्ध जनों के लिए एक समस्या है। आधुनिक भारत में संयुक्त परिवार की प्रचलन कम होता जा रहा। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में परिणत होते जा रहे। पहले जहाँ संयुक्त परिवार में एक छत के नीचे संपूर्ण परिवार रहता था। मम्मी–पापा, चाचा–चाची उनके बच्चे इत्यादि। परिवार में बूढ़े–बुजुर्गो का आदर हुआ करता था। परिवार के बूढ़े–बुजुर्ग बच्चों को धर्म, संस्कार नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं। सुख–दुख हारी बीमारी में लोग एक दूसरे को सहारा देते थे। परिवार के अहम फैसले के लिए बुजुर्गो से सलाह मशविरा लिया जाता था। परिवार के सदस्यों के बीच किसी भी तरह परायेपन की भावना न थी। घर का आँगन सगे संबंधियों नीती–पोतों के चहक महक से भरा पूरा रहता था। ऐसे परिवार में वृद्धों का जीवन भरा पूरा और खुशहाल रहता था। कहीं भी अकेलापन महसूस नहीं होती।

लेकिन संयुक्त परिवार के टूटने के साथ धन सम्पत्ति का भी बँटवारा हो रहा है। मन में अपने परायेपन की भावना जगी। दूसरी ओर स्वार्थ में डूबे आधुनिक युवा पीढ़ी के इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि माँ बाप किस हाल में जी रहे? बँटवारा से माँ बाप खुश है या नहीं? अपने संतानों के बँटते देखकर वृद्धों के मन में अत्यंत पीड़ा हुई। उनकी देखभाल या सेवा के लिए भी भाईयों के बीच कलह हो रहे। पारिवारिक कलह पर व्यथित वृद्ध माँ की पीड़ा 'ऋषभ देव शर्मा' की निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है –

''दो बेटे है मेरे
बहुत प्यारे धरे थे मैंने,
इनके नाम बलजीत और बलजोर!
गबरू जवान निकले दोनों ही
जब जोट मिलाकर चलते,
सारे गाँव की छाती पर लोट जाता
मेरी छातियाँ उमग उमग पड़ती।
मैं बलि बलि जाती
अपने कलेजे के टुकड़ो को!
वक्त बदल गया
कलेजे के टुकड़ों
कलेजे को टुकड़ों कर दिए।
माँ भी बाँट ली।
जमीन के लिए लड़े दोनों
अपने अपने पास रखने को,''[9]

वृद्ध मनोविज्ञान के सहारे वृद्धों के जीवन पर कई शोध कार्य एवं सर्वेक्षण किये गये। इन शोधकार्य एवं सर्वेक्षण में वृद्ध जीवन से संबंधित कई रोचक पहलुओं का उजागर हुआ।

अलग–अलग देश या संस्कृति में वृद्धों के समक्ष अलग समस्या तथा चुनौतियाँ है। मनुष्य को वृद्ध बनाने के लिए कठिन संघर्षमय जीवन, शारीरिक तथा मानसिक कारक होते हैं।

संघर्षमय जीवन बिताने वाले लोग अपने आपको जल्द ही बूढ़ा महसूस करते हैं। यद्यपि कि वे शारीरिक तौर पर वे बूढे नहीं दिखाई देते। ''प्रो0 बोर लिया की टीम ने 107 पचपन वर्षीय स्कूली शिक्षकों का सर्वेक्षण किया और यह निष्कर्ष निकाला कि 40 प्रतिशत शिक्षक अपने आयु से अधिक युवा महसूस करते हैं जबकि 30 प्रतिशत अधिक बूढ़े। 1954 ई0 में अमेरिका के टकसाल एंड लोगों की टीम ने 1032 लोगों से प्रश्न किया कि साठ वर्ष के लोग अपने को बूढ़ा नहीं मानते जबकि 53 प्रतिशत अस्सी वर्षीय अपने को बूढ़ा महसूस करते हैं।''[10]

लतरोक रिपोर्ट में यह कहा गया है कि साठ वर्ष से अधिक आयु वालों में आधे से अधिक यह समझते कि वे अस्वस्थ हैं जबकि धारणा केवल भय बनाती है। सन् 1956 में इंग्लैंड में ट्रेनब्रिज व शेफील्ड में जो सर्वेक्षण हुआ था उसके परिणाम विपरीत थे।

''इस सर्वेक्षण में पाया गया कि 26 प्रतिशत पुरूष स्वस्थ थे जबकि 64 प्रतिशत अपने आपको स्वस्थ समझते थे। इसी प्रकार 23 प्रतिशत महिलाएँ स्वस्थ थी जबकि 48 प्रतिशत समझती थी। इससे यह निष्कर्ष भी निकला कि वृद्ध पाचन शक्ति साँस मस्तिष्क और शरीर की कमजोरी से ग्रस्त थे पर उन्हें उसका एहसास नहीं था।''[11]

पश्चिमी देशों की पारिवारिक प्रणाली मुख्य रूप से एकल परिवार पर आधारित है, जहाँ माता–पिता और उनके अविवाहित बच्चे भी साथ रहते हैं। यह प्रणाली व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और निजता को बहुत संतान माँ–बाप से अलग होकर रहते हैं जबकि भारत में विवाह के बाद भी वृद्ध माँ–बाप के साथ परिवार में रहते हैं। हालांकि समय के साथ इसमें थोड़ा परिवर्तन आया है। पश्चिमी देशों में युवा पीढ़ी अपने स्वच्छंद और मौज मस्ती भरे जीवन में बुजुर्गो का खलल नहीं चाहते। यह सारी चीजें भारतीय युवाओं पर भी हावी हो रही है।

वृद्धों को जब अपने संतानों या सगे संबंधियों से तिरस्कार मिलता है तो परिवार में रहना दुस्कर हो जाता है। ऐसी स्थिति में वे वृद्धाश्रम की ओर रूख करते हैं। पश्चिमी देशों में वृद्धाश्रमों का चलन बहुत रहा है, उन्हें वहाँ 'ओल्ड ऐज होम' कहा गया है। भारत में भी धीरे–धीरे वृद्धाश्रमों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। कारण सिर्फ वही संयुक्त परिवारों का विघटन तथा वृद्धों के प्रति बढ़ती संवेदनहीनता।

वृद्धाश्रम में वृद्धों के लिए ढेर सारी सुविधाएँ हैं। लेकिन वहाँ भी इन वृद्धों को जगह मिल पाती है जिनके पास पर्याप्त जमा पूँजी है। जबकि निर्धन बूढ़े बुजुर्गो को वृद्धाश्रम के आस पास चक्कर लगाते देखा जा सकता है। हमारे पास सबसे बड़ी समस्या तो यही है कि किस प्रकार जरूरतमंद लोगों को उनका हक दिया जा सके।

वृद्धावस्था में पति या पत्नी में किसी एक के न होने पर उनके जीवन में खालीपन छोड़ जाता है। इस स्थिति में शारीरिक गतिशीलता या किसी तरह की रोगों के शिकार होने पर स्वाधीनता क्रमशः चली जाती है। अपने दैनिक गतिविधि के लिए भी दूसरों आश्रित होना पड़ता है। चाहे यह पराधीनता अपनी संतान की ही हो। इस दृष्टि से 'खून के रेशे' के बड़े पापा 'बनवास' की जानकी देवी तथा 'चीख' कहानी की माधुरी देवी की स्थिति एक जैसी है। वृद्धों को परनिर्भरता के कारण उनके सम्मान और रूतबा को शहरी ठेस पहुँचती है। इनसे उपजी कुंठाएँ वृद्धों को जिद्दी व चिडचिड़ा बना देती है।

'चीख' कहानी में माधुरी देवी शाटिका की मरीज है। जोड़ो में दर्द कारण चल फिर नहीं सकती और अपने दैनिक गतिविधि के लिये बेटी मानसी पर आश्रित रहती है। मानसी घर के कामकाज के साथ सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय है। इस कारण माँ को पर्याप्त समय नहीं दे पाती। पर निर्भरता से उपजी कुंठा माधुरी देवी को गुस्सैल व चिड़चिड़ा बना देती है। नौकर पर चिल्लाती है– ''बीबी जी का रौब दिखाता है मुझे ? बीबी जी के पास पैसा हो गया गाड़ी हो गई तो वह बड़ी हो गई और मैं ? मैं कुछ नहीं हूँ ? उपर से मुए जाने कौन कौन चले आते हैं वक्त बेवक्त मीटिंग है, पार्टी है, ऐसी कौन सी प्रधानमंत्री हो गई है वह ? इन बेशऊरों को क्या मालूम नहीं मैं बीमार हूँ ..... ।''[12]

वृद्धों के जीवन में आए ऊब, खालीपन और बोरियत के कारण अतीत मोह में पड़ जाते हैं। जीवन के सुखद क्षणों को याद करते हुए कठिन वर्तमान जीने का प्रयास करते हैं।

अपने जीवन के अनिश्चितता के कारण डरावने सपने का ख्याल आने लगते हैं। 'रात में सागर' कहानी में अमेरिका के रिकवरी सेंटर में सत्यवती रैना रात ने ठीक से सो नहीं पाती। सारी सुविधाएं होने के बाद भी भावनात्मक रूप से टुटी हुई रहती है। बहु–बेटे का प्यार व सामीप्य नहीं मिल पाता है। रात में डरावने सपने आते हैं – ''सारी रात मेरे सिरहाने में सागर गरजता रहा। मैं समुद्र तल के महल ढूंढती रही, परियाँ और हीरों की मटकियाँ पर वहाँ कुछ नहीं था सिर्फ एक राक्षस हुँकारता रहा।''[13]

व्यक्ति अपना संपूर्ण जीवन जमीन जायदाद धन संपत्ति इकट्ठा करने में लगा देता है, इस उम्मीद से कि उसका वृद्धावस्था आसानी से कट सके तथा संतानों का भविष्य सुरक्षित रहे। लेकिन अपने संजोये सपनों को टूटते देखकर बहुत आहत होते हैं जब बुढ़ाबे में धन जायदाद ही उनका दुश्मन बनते हैं। युवा पीढ़ी पुरखों की विरासत संजोने धन जायदाद संपत्ति का लाभ लेते है किन्तु इन धन संपत्ति जमीन जायदाद के प्रति कोई बाहरी मोह नहीं रखते। उन्हें बेचकर धन कमाना या शहर की ओर बसना पसंद करते हैं। युवा पीढ़ी के इन हरकतों से वृद्ध माता पिता व्यथित होते हैं। 'मोह' कहानी की गुणी अपने बेटों द्वारा गाँव के घर जमीन जायदाद बेचकर शहर में बसने की आग्रह से आहत होती है।

सामान्यतः वृद्ध व्यक्ति अपने संतानों के साथ अपने गाँव, शहर या फिर मातृभूमि छोड़कर (विदेश या परदेस में अपना अंतिम समय बिताना स्वीकार नहीं करते और यदि स्वीकार भी करते हैं तो अपनी पुश्तैनी विरासतों, घरौंदो को छोड़कर परदेस में नये माहौल में समायोजन करना दुष्क होता है। 'मोह' कहानी में गुणी को शहरी जीवन बिल्कुल नहीं भाता। एक वर्ष बेटे शंभु के यहाँ रह चुकी। शहरी परिवेश और ढाई कमरा वाला सीलन भरा मकान, छोटा सा आँगन। वहाँ खुली धूप और हवा को तरस जाती। न किसी से बातचीत, ना किसी से मित्रता। तब गुणी को अपना घर याद आता और पति नीलकंठ की बात याद आती – ''अपने घर के जोड़ का दूसरा घर पूरे गाँव में वहीं है गुणी। इधर बैठकर लगता है, जैसे स्वर्ग में बैठा हूँ।''[14]

निष्कर्ष :– साठोत्तरी हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श पर कई रचनाएँ की गई है। वृद्ध विमर्श पर आधारित रचनाओं में विशेषकर कहानियों में भौतिकवादी युग में माननीय संबंधों के बीच आई परिवर्तन की पड़ताल है। यह सिर्फ वृद्धो के समक्ष आई समस्याओं की ही नहीं, बल्कि किन परिस्थितियों में वृक्षों की हालत और दयनीय होती जा रही, चाहे वो कारण सामाजिक, सांस्कृतिक या आर्थिक ही हो।

सांस्कृतिक संक्रमण के दौर ने जो कारक युवाओं को प्रभावित कर नहीं है। नैतिक मूल्य, नियम आदर्श व संस्कार इत्यादि जब पाश्चात्य संस्कृति के भेंट चढ़ गई हो तो युवा पीढ़ी के विचारों आदर्शो जीवनशैली में परिवर्तन दिखना लाजिमी है। अतः आज की युवा पीढ़ी महत्वाकांक्षी है, व्यक्तिवादी है और निजी स्वतंत्रता को तवज्जों देते हैं। अपनी स्वतंत्रता और मौज मस्ती भरे जीवन में बूढ़े–बुजुर्गो की दखल नहीं चाहते।

वृद्धों की अकेलापन का कारण आज की पारिवारिक संरचना तथा युवा पीढ़ी की कामकाजी व्यस्तता है। आज भारतीय पारिवारिक संरचना में जो परिवर्तन आया है। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में परिणत हो रहे। भारत में भी पश्चिम के तर्ज पर एकल परिवार प्रणाली स्थापित हुई। जो माता पिता और अविवाहित बच्चों को साथ रखते हैं। वहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और नीजता को बहुत महत्व देती है। इस कारण से एकल परिवार के वृद्धों के समक्ष संकट आ पड़ती है। एकल परिवार में जहाँ निजी स्वतंत्रता को महत्व दिया जाता है, वृद्धों की देखभाल व सेवा के लिए न कोई विशेष इच्छाशक्ति होती है और न ही पर्याप्त समय। अतः उनकी है सियत घर में पड़े बेकार वस्तु के समान होती है। युवाओंकी वृद्धों के प्रति महत्वहीनता एवं संवेदनहीनता के कारण वे भावनात्मक रूप से टुटे हुए रहते हैं। अपने का प्यार, सेवा व सामीप्य को तरसते हैं। इस तरह दो पीढ़ियों के बीच दूरियाँ आई।

निष्कर्षतः– चन्द्रकांता की कहानियाँ भी वृद्धों की समस्या का हृदयस्पर्शी चित्रण है। उनकी वृद्ध विमर्श पर आधारित कहानियाँ समकालीन परिवेश के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक कारणों का भी अंकन करती है जिनसे वद्ध जीवन प्रभावित है।

संदर्भ सूची :–

1. चन्द्रकांता, ऐलान गली जिंदा है, राजकमल पेपर बैंक, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–156
2. चन्द्रकांता, प्रश्नों के दायरे में, अमन प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण (2025), पृष्ठ सं0–66
3. चन्द्रकांता, कोठे पर कागा, अमन प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ सं0–111
4. राजौरिया शिवकुमार, वृद्धावस्था, विमर्श और हिन्दी कहानी, अद्वैत प्रकाशन, संस्करण–2021, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–10
5. चन्द्रकांता, सलाखों के पीछे, अमन प्रकाशन कानपुर, द्वितीय संस्करण 2014, पृष्ठ सं0–12
6. चन्द्रकांता, बदलते हालात में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–87
7. चन्द्रकांता, रात में सावार, रेमाधव पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–135
8. चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानपुर तृतीय सं0 (2018), पृष्ठ सं0–68
9. राजौरिया शिवकुमार, वृद्धावस्था, विमर्श और कहानी, अद्वैत प्रकाशन, संस्करण–2021, नई दिल्ली, संस्करण (2021) पृष्ठ सं0–47
10. राजौरिया शिवकुमार, वृद्धावस्था, विमर्श और कहानी, अद्वैत प्रकाशन, संस्करण–2021, नई दिल्ली, संस्करण (2021) पृष्ठ सं0–26
11. राजौरिया शिवकुमार, वृद्धावस्था, विमर्श और कहानी, अद्वैत प्रकाशन, संस्करण–2021, नई दिल्ली, संस्करण (2021) पृष्ठ सं0–26
12. चन्द्रकांता, कोठे पर कागा, अमन प्रकाशन कानपुर, पृष्ठ सं0–113
13. चन्द्रकांता, अब्बू ने कहा था, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–20
14. चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, अमन प्रकाशन कानपुर, पृष्ठ सं0–35